संक्षिप्त समाचार

दिल्ली की नॉर्थ ईस्ट लोकसभा सीट पर दो भोजपुरी कलाकारों के बीच हो सकता है मुकाबला

नईदिल्ली, एजेंसी। यूपी में का बा गाकर फेमस हुई बिहार की लोकगायिका नेहा सिंह राठौर के चुनावी राजनीति में उतरने की अटकलें हैं। चर्चा यह भी है कि कांग्रेस उन्हें भोजपुरी के ही सुपरस्टार मनोज तिवारी के खिलाफ लड़ाने जा रही है। कई दिनों से चल रही अटकलों के बाद अब खुद नेहा सिंह राठौर ने संकेत ऐसे संकेत दिए हैं जिससे दिल्ली की नॉर्थ ईस्ट लोकसभा सीट पर अब दो भोजपुरी कलाकारों के बीच मुकाबला तय माना जा रहा है। मनोज तिवारी इस सीट से लगातार दो बार जीत दर्ज कर चुके हैं और भाजपा ने उन्हें तीसरी बार टिकट दिया है। वह दिल्ली एकमात्र ऐसे सांसद हैं जिनपर भाजपा ने एक बार फिर दांव लगाया है। अन्य सभी छह सांसदों के टिकट काट दिए गए हैं। नेहा सिंह राठौर ने एएनआई से बातचीत के दौरान मनोज तिवारी के खिलाफ उतारे जाने की चर्चाओं पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने इन्हें खारिज नहीं किया, बल्कि कई ऐसी बातें कहीं जिन्हें उनकी संभावित उम्मीदवारी का संकेत माना जा रहा है। मुझे नहीं पता कि कांग्रेस की तरफ से मुझे टिकट मिलेगा या नहीं, ना मैं इसको लेकर बहुत हहुआई (व्याकुल) हुई हूं। मुझे मीडिया से ही पता चला है कि कांग्रेस से टिकट मिल रहा है मनोज तिवारी के खिलाफ। मुझे अच्छा अच्छा लग रहा है। सकारात्मक वजहों से चर्चा में हूं। अच्छा लग रहा है।

झारखंड में मांडू क्षेत्र के भाजपा विधायक जयप्रकाश भाई पटेल काँग्रेस में शामिल

राँची, एजेंसी। झारखंड के मांडू विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक जयप्रकाश भाई पटेल काँग्रेस में शामिल हो गए हैं। नई दिल्ली स्थित काँग्रेस मुख्यालय में पार्टी के वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा, प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर और प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने उन्हें पार्टी की सदस्यता दिलाई। माना जा रहा है कि वह हजारीबाग लोकसभा सीट से काँग्रेस के प्रत्याशी हो सकते हैं। जयप्रकाश भाई पटेल को भाजपा ने कुछ महीने पहले झारखंड विधानसभा में विधायक दल का सचेतक नियुक्त किया था। उनकी गिनती झारखंड के प्रमुख कुर्मी नेताओं में होती है। इसके पहले वह झारखंड मुक्ति मोर्चा में थे। वह मांडू क्षेत्र से लगातार दो बार विधायक चुने गए हैं। उनके पिता दिवंगत टेकलाल महतो भी मांडू क्षेत्र से कई बार विधायक और गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से सांसद रह चुके थे। कांग्रेस में शामिल होने के बाद पटेल ने कहा कि वे अपने पिता स्व. टेकलाल महतो के सपनों को पूरा करने के लिए काँग्रेस में शामिल हुए हैं। उन्होंने दावा किया कि इस बार झारखंड की सभी 14 सीटों पर इंडिया गुट के प्रत्याशी विजयी होंगे।

मुख्यमंत्री स्टालिन शुक्रवार को तमिलनाडु के तिरुचि से इंडिया ब्लॉक के अभियान की करेंगे शुरुआत

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन, जो द्रमुक के अध्यक्ष भी हैं, शुक्रवार से इंडिया ब्लॉक का चुनाव अभियान शुरू करेंगे। तिरुचि के सिरुगनूर से शुरू होने वाले उद्घाटन कार्यक्रम के प्रभारी द्रमुक नेता और राज्य मंत्री के.एन. नेहरू ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा कि कार्यक्रम को मुख्यमंत्री स्टालिन, एमडीएमके नेता वाइको और इंडिया ब्लॉक के कई वरिष्ठ नेता संबोधित करेंगे। वाइको के बेटे और एमडीएमके के वरिष्ठ नेता दुरई वाइको तिरुचि से इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवार हैं। तिरुचि को चुनाव अभियान शुरू करने के लिए एक भाग्यशाली स्थान माना जाता है। विडंबना यह है कि पेरियार की नास्तिकता की विचारधारा पर आधारित द्रमुक यहाँ से अपनी चुनावी यात्रा शुरू कर रही है। करुणानिधि ने स्वयं तिरुचि को तिरुप्पुमुनै तिरुचि (टर्निंग पॉइंट तिरुचि) कहा था और स्टालिन भी तिरुचि को पुरानी यादों के साथ संदर्भित करते हैं। मंत्री नेहरू ने कहा कि मुख्यमंत्री राज्य के सभी 39 लोकसभा क्षेत्रों का दौरा करेंगे और इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवारों का परिचय देंगे। द्रमुक 21 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, काँग्रेस नौ, माकपा दो, भाकपा दो, वीसीके दो, एमडीएमके एक, आईयूएमएल एक और केएमडीके एक सीट पर चुनाव लड़ रही है। द्रमुक के नेतृत्व वाले सेक्युलर प्रोग्रेसिव अलायंस ने 2019 के आम चुनावों में 39 में से 38 सीटों पर जीत हासिल की और सीएम स्टालिन अब 2024 के चुनावों में क्लीन स्वीप करने का लक्ष्य बना रहे हैं। मुख्यमंत्री ने पार्टी कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं को अपने संबोधन में सभी इंडिया ब्लॉक उम्मीदवारों की पूर्ण जीत सुनिश्चित करने के लिए जमीनी स्तर पर कड़ी मेहनत करने पर जोर दिया था।

देहरादून जिले में चकराता के उदांवा गांव जहां कभी वोट मांगने ही नहीं पहुंचा कोई, विधायक-सांसद

देहरादून, एजेंसी। देश में एक गांव ऐसा भी है जहां आज तक कोई वोट मांगने के लिए नहीं पहुंचा है। हैरानी की बात है कि कई बुजुर्गों ने आज तक कोई सांसद या विधायक तक को नहीं देखा है। चुनावी मौसम में उम्मीदवारों को मतदाताओं का इंतजार रहता है, लेकिन उत्तराखंड के एक गांव में स्थिति उलट है।

बात हो रही है देहरादून जिले में चकराता के उदांवा गांव की। देश में पहला लोकसभा चुनाव 1952 में हुआ था, तब से आज तक करीब 72 साल के चुनावी इतिहास में लोकसभा-विधानसभा चुनावों में एक भी प्रत्याशी ने इस गांव का रुख नहीं किया। लोकसभा चुनाव की रणभेरी बजते ही प्रत्याशी, वोटरों को आकर्षित करने के लिए सक्रिय हो गए हैं। वोट की खातिर प्रत्याशियों ने नगरों के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी भाग-दौड़ शुरू कर दी है। लेकिन टिहरी लोकसभा क्षेत्र का उदांवा गांव अपवाद बना हुआ है।

सात दशक से ज्यादा वक्त बीतने के बाद भी इस गांव के निवासियों को लोकसभा और विधानसभा चुनाव के प्रत्याशियों के दर्शन नहीं हुए हैं। दरअसल, इस गांव तक पहुंचने को दस किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। इसके सबके बाद भी गांव के वोटर हर चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं। उदांवा निवासी एवं पूर्व प्रधान बहादुर सिंह चौहान बताते हैं कि उनके गांव में चुनाव को लेकर कोई हलचल दिखाई नहीं पड़ती। आजादी से लेकर आज तक कोई भी प्रत्याशी, चाहे वह किसी भी पार्टी का हो, इस गांव में वोट मांगने नहीं आया। वोट डालने के लिए बहुत जद्दोजहद करनी पड़ती है। लेकिन इस डर से वोट डालते हैं कि कहीं वोटर लिस्ट से नाम न कट जाए। 18 साल की नीलिमर पहली बार वोट डालेंगी। गांव के लोगों को मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं है। साथ ही नेताओं के रवैये के चलते लोगों में चुनाव को लेकर उत्साह नहीं है। कई बुजुर्गों ने नहीं देखा विधायक-सांसद का चेहरा बुल्हाड़ ग्राम पंचायत में आने वाले इस गांव में आज तक कोई भी प्रत्याशी वोट मांगने नहीं पहुंचा है। प्रधान तारा देवी का कहना है कि लोकसभा चुनाव हो या विधानसभा चुनाव यहां कभी कोई प्रत्याशी वोट मांगने नहीं आया। गांव के कई बुजुर्गों ने अपने विधायक और सांसद का चेहरा तक नहीं देखा है। सात साल पहले स्वीकृत हुई सड़क पर काम आज तक शुरू नहीं हुआ पूरे देश में हाल ही में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया लेकिन उदांवा गांव के पांच सौ ग्रामीण आज भी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। गांव में किसी व्यक्ति के बीमार होने पर उसे डंडी कंडी के सहारे दस किलोमीटर की दूरी नापकर सड़क तक पहुंचाना पड़ता है।

वक्त पर इलाज नहीं मिलने के चलते कई बार मरीज जान तक गंवा बैठते हैं। गांव में सरकारी सुविधा के नाम पर सिर्फ और सिर्फ एक प्राथमिक विद्यालय है। ग्राम प्रधान तारा देवी ने बताया कि वर्ष 2017 में तत्कालीन मुख्यमंत्री ने बुल्हाड़ दौरे के दौरान उदांवा तक सड़क निर्माण की घोषणा की थी। ग्रामीण मातवर सिंह और अतर सिंह ने बताया कि सर्वे के बाद वर्ष 2018 में सड़क निर्माण के लिए पहले चरण में 21 लाख रुपये जारी भी किए गए लेकिन वन विभाग से एनओसी नहीं मिलने के कारण सड़क निर्माण आज तक शुरू नहीं हो पाया है।

नशा करने वालों के परिवारों को देना होगा जुर्माना, हिमाचल में पंचायत का फरमान

हमीरपुर, एजेंसी। हमीरपुर जिले की एक पंचायत ने अपने फैसले में नशे की लत वाले परिवारों को जुर्माना भरने के आदेश जारी किए हैं। लंबलू ग्राम पंचायत ने अपने फैसले में कहा कि नशे की लत वाले परिवारों को महिला मंडल द्वारा निर्धारित जुर्माना भरना होगा। यही नहीं पंचायत ने नशा मुक्त परिवारों को सम्मानित करने का भी फैसला लिया है। पंचायत ने अपने आदेश में कहा कि नशा मुक्त परिवारों को आदर्श परिवार की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। पंचायत के इस फैसले की खूब चर्चा हो रही है। हमीरपुर जिले के लंबलू पंचायत का नेतृत्व करने वाले और पूर्व शिक्षाविद करतार सिंह चौहान ने पंचायत वार्डों में नशा-मुक्त समितियों का गठन किया है। इसमें महिला कार्यकर्ताओं को नशीले पदार्थों के दुरुपयोग को खत्म करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। चौहान ने कहा कि जिन परिवारों के लोग नशे के आदी हैं, वे महिला मंडल द्वारा निर्धारित जुर्माना अदा करेंगे।

हमीरपुर जिले के लंबलू पंचायत का नेतृत्व करने वाले और पूर्व शिक्षाविद करतार सिंह चौहान ने कहा कि जिन परिवारों को नशे की लत नहीं है, जिनमें धूम्रपान से परहेज करने वाले लोग भी शामिल हैं, उन्हें आदर्श परिवार की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। पंचायत के आदेश के अनुसार, समितियों की प्रभारी महिलायें घर-घर जाकर महिलाओं से शपथ पत्र पर हस्ताक्षर ले रही हैं।

समितियों की प्रभारी महिलायें घर-घर जाकर परिवार की महिला सदस्यों से पूछ रही हैं कि उनके घर में कोई भी धूम्रपान या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करता है। संकल्प पत्रों को पंचायत भवन कार्यालय में जमा करना होगा। आदेश में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति नशे का आदी पाया जाता है, तो महिला कार्यकर्ताओं को पंचायत को आश्वस्त करना होगा कि ऐसे लोगों को निर्धारित समय अवधि के भीतर उनकी लत से छुटकारा दिलाया जाएगा।

नारी न्याय के लिए संघर्ष करें : अलका लाम्बा

नई दिल्ली, एजेंसी। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अल्का लाम्बा से राजस्थान महिला कांग्रेस की प्रदेश महासचिव अरुणा गौड़ ने नई दिल्ली में 24 अकबर रोड पर कांग्रेस के राष्ट्रीय कार्यालय में शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष अलका लाम्बा ने जयपुर के झोटवाड़ा में आयोजित नारी न्याय सम्मेलन की भूरी भूरी प्रशंसा की ओर सम्मेलन की आयोजक अरुणा गौड़ को शाल ओढ़ाकर सम्मानित और प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर अलका लाम्बा ने नारी न्याय के लिए कांग्रेस की पांच गारंटियों को घर घर पहुंचने और नारी न्याय के लिए न्याय का हक मिलने तक महिला कार्यकर्ताओं से संघर्ष का आव्हान किया। महालक्ष्मी गारंटी के तहत गरीब परिवार की हर एक महिला को सालाना 1 लाख रुपये की सहायता दी जाएगी, किसी प्रकार आधी आबादी पूरा हक गारंटी के तहत केंद्र सरकार की नई नियुक्तियों में महिलाओं को 50 फीसदी हिस्सेदारी मिलेंगी,शक्ति का सम्मान योजना के तहत आंगनवाड़ी, आशा और मिड डे मील कार्यकर्ताओं के मासिक वेतन में केंद्र सरकार का दोगुना योगदान देगी,अधिकार मैत्री गारंटी के तहत महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और जरूरी सहायता देने के लिए प्रत्येक पंचायत में अधिकार मैत्री के रूप में एक पैरा-लीगल यानी कानूनी सहायक की नियुक्ति की जाएगी।

तमिलनाडु के लोग कर्नाटक में बम लगाते हैं, केंद्रीय मंत्री के बयान पर बवाल; अब मांगी माफी

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु के लोगों को रामेश्वरम कैफे ब्लास्ट से जोड़ने वाले बयान को लेकर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और केंद्रीय मंत्री शोभा करंदलाजे के बीच वाकयुद्ध छिड़ गया। सीएम स्टालिन ने केंद्रीय मंत्री की टिप्पणियों की निंदा करते हुए उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की। वहीं करंदलजे ने पलटवार करते हुए कहा कि स्टालिन तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं। हालांकि, उन्होंने अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांग ली।

तमिलनाडु के लोग कर्नाटक में बम लगाते हैं- शोभा करंदलाजे : केंद्रीय मंत्री शोभा करंदलाजे ने कर्नाटक में बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थिति को लेकर मंगलवार को कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि तमिलनाडु के लोग राज्य में आकर बम लगाते हैं। बेंगलुरु में रविवार को अजान के दौरान हनुमान चालीसा बजाने पर एक व्यापारी को पीटने की घटना के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा किये गये प्रदर्शन के दौरान शोभा ने कांग्रेस सरकार पर वोट बैंक की राजनीति में शामिल होने और हिंदुओं की भावनाओं को आहत करने का आरोप लगाया। बेंगलुरु उत्तर से भाजपा उम्मीदवार ने यहां संवाददाताओं से कहा, कर्नाटक में कानून-व्यवस्था बेहद खराब हो गई है। तमिलनाडु से आए लोग यहां बम लगाते हैं, दिल्ली से आए लोग पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते हैं और केरल से आने वाले लोग तेजाब हमले करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस की वोट बैंक की राजनीति की कीमत हिंदू चुका रहे हैं। विवाद बढ़ता देख केंद्रीय मंत्री शोभा करंदलाजे ने माफी मांग ली। उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा, मैं अपने तमिल भाइयों और बहनों को स्पष्ट करना चाहती हूं कि मेरे शब्दों का वो मतलब नहीं था जो निकाला गया। फिर भी मैं देख रही हूं कि मेरी टिप्पणियों से कुछ लोगों को दुख पहुंचा है - और इसके लिए मैं माफी मांगती हूं। मेरी टिप्पणियां पूरी तरह से कृष्णगिरि जंगल में ट्रेनिंग ले रहे उन लोगों के लिए थीं, जो रामेश्वरम कैफे विस्फोट से जुड़े थे। तमिलनाडु का कोई भी व्यक्ति जो आहत हुआ है, उससे मैं अपने दिल की गहराइयों से क्षमा मांगती हूं। इसके अलावा, मैं अपनी पिछली टिप्पणियाँ वापस लेती हूं। इससे पहले तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने केंद्रीय मंत्री की टिप्पणी की निंदा की। स्टालिन ने एक्स पर कहा, भाजपा की केंद्रीय मंत्री शोभा के बेतुके बयान की कड़ी निंदा करता हूं।

यूपी की 80 सीटों में अवध में आने वाली 16 सीटें सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में हमेशा से निर्णायक साबित होती रही

लखनऊ, एजेंसी। यूपी की 80 सीटों में अवध में आने वाली 16 सीटें सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में हमेशा से निर्णायक साबित होती रही हैं। अवध ने जिसका भी साथ दिया वही सरताज बना। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने यहां सर्वाधिक 13 सीटें जीती थीं। अंबेडकरनगर व श्रावस्ती में बसपा और रायबरेली में सोनिया गांधी ने जीत दर्ज की थी। वर्ष 2019 के चुनाव में दो चौंकाने वाले परिणाम आए थे। पहला अमेठी अपने घर में कांग्रेस के राहुल गांधी भाजपा की स्मृति ईरानी से चुनाव हार गए और दूसरा श्रावस्ती सीट से बसपा के राम शिरोमणि ने भाजपा को हराकर सभी को चौंकाया। ब्राह्मण, ओबीसी और मुस्लिम बाहुल्य यह सीट हमेशा से चौंकाने वाले परिणाम देती रही है। भाजपा ने इस बार यहां से उम्मीदवार बदलते हुए ब्राह्मण कार्ड खेला है। गोंडा की सीट अभी विवादों में फंसी है, जिसके चलते उम्मीदवार तय नहीं हो पाया है।

अवध ने प्रधानमंत्री तक दिए : अवध क्षेत्र में आने वाली लखनऊ संसदीय सीट को अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी कर्मभूमि बनाई। यहीं से वह सांसद चुन कर देश के प्रधानमंत्री बने। राजनाथ सिंह दो बार से लगातार चुनाव जीत रहे हैं। भाजपा की पहली सरकार में गृह मंत्री और दूसरी सरकार में रक्षा मंत्री बने। अवध में ही फैजाबाद संसदीय सीट भी आती है। राम लहर में भाजपा यह सीट जीती और पिछले दो चुनावों से भी उसका ही दबदबा बना हुआ है। अवध में ही रायबरेली और अमेठी संसदीय सीट भी आती है।

ओबीसी व मुस्लिम बाहुल्य : अवध क्षेत्र में आने वाली 16 सीटों में अधिकतर सीटें मुस्लिम और ओबीसी बहुल हैं। गोंडा, श्रावस्ती और बहराइच सीट सर्वाधिक मुस्लिम आबादी वाली मानी जाती है। अवध में कछार यानी गोमती, सरयू और राप्ती नदी के किनारे वाला इलाका कुर्मी बाहुल्य माना जाता है। यही कारण है कि बेनी प्रसाद वर्मा सपा के टिकट पर कैसरगंज से वर्ष 1996, 1998, 1999 व 2004 और कांग्रेस के टिकट पर गोंडा से 2009 में सांसद चुने गए। अवध में उन्हें कुर्मियों का बड़ा नेता माना जाता रहा है।

बीजेपी छोड़ रहे हैं वसुंधरा के करीबी नेता, ओम बिरला के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे ?

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में बीजेपी का तगड़ा झटका लग सकता है। वसुंधरा राजे के करीबी गुर्जर नेता प्रहलाग गुंजल के कांग्रेस में शामिल होने की अटकलें है। चर्चा है कि कांग्रेस के साथ बात हो गई है। गुंजल लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के खिला चुनाव लड़ सकते है। प्रहलाद गुंजर की पोस्ट से अटकलों को हला मिली है। उन्होंने मोदी का परिवार टैग हटा लिया है। बता दें प्रहलाद गुंजल हाड़ौती अंचल यानी कोटा-बूंदी के बड़े नेता माने जाते है। गुर्जर वोटरों में पकड़ मानी जाती है। कोटा की सियासी में वह गहलोत के करीबी पूर्व कैबिनेट मंत्री शांति धारीवाल के धुर विरोधी माने जाते है, लेकिन अब उन्होंने बीजेपी छोड़ने की तैयारी कर ली है। हालांकि, आधिकारिक तौर पर उन्होंने कोई बयान नहीं दिया है।

गुंजल के कांग्रेस में शामिल होने की अटकलें मंगलवार को अचानक से सोशल मीडिया पर चलना शुरू हुईं, जिसने बाद में राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं को हवा दे दी।सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रहलाद गुंजल को पार्टी में शामिल करने को लेकर कांग्रेस आलाकमान भी सहमत हो गया है। माना तो यहां तक जा रहा है कि बुधवार को नई दिल्ली स्थित एआइसीसी मुख्यालय में अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की मौजूदगी में प्रहलाद गुंजल को औपचारिक रूप से पार्टी की सदस्यता दिलाई जा सकती है। वसुंधरा के सबसे करीबी नेता प्रहलाद गुंजल पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के सबसे विश्वस्त और करीबी नेताओं में से एक हैं। वे वसुंधरा राजे के सीएम कार्यकाल के दौरान मंत्री भी रह चुके हैं। पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान वसुंधरा राजे को सीएम फेस घोषित करने को लेकर भाजपा नेतृत्व के खिलाफ खुलकर सामने आने को लेकर भी वे चर्चाओं में रहे थे। उनका नाम हाड़ौती संभाग के प्रमुख नेताओं में शुमार है।

बता दें इससे पहले वसुंधरा राजे के करीब नेता चूरू सांसद राहुल कस्वां बीजेपी छोड़ कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। कस्वां को तो कांग्रेस ने हाथों-हाथ चूरू सीट से टिकट थमा दिया, वहीं उम्मेदाराम के भी बाड़मेर सीट से प्रत्याशी बनाये जाने की चर्चाएं हैं। इधर कोटा-बूंदी सीट से कांग्रेस ने अभी तक अपना प्रत्याशी घोषित नहीं किया है। बता दें विधानसभा चुनाव में प्रहलाद गुंजल कम वोटों से गहलोत के मंत्री धारीवाल से हार गए थे। इसके बाद से ही बीजेपी में उनकी उपेक्षा शुरू हो गई।जानकारी के अनुसार प्रहलाद गुंजल पिछले कुछ समय से भाजपा के प्रदेश से लेकर शीर्ष नेतृत्व तक से कई बातों को लेकर नाराज़ चल रहे हैं। इस उपेक्षा को ही आधार मानकर अब उनके भाजपा छोड़ कांग्रेस में जाने की बात ज़ोर पकड़े हुए हैं। हालांकि गुंजल की ओर से अभी तक उनके नाम को लेकर चल रहे इन तमाम चर्चाओं और अटकलों पर कोई जवाब नहीं आया है।

महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर वोट नहीं मिलने वाले हैं : उद्धव

मुंबई, एजेंसी। शिवसेना (यूबीटी) चीफ उद्धव ठाकरे ने मंगलवार को केंद्र की सत्ताधारी भाजपा पर चुनाव जीतने के लिए एक ठाकरे को चुराने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उद्धव ठाकरे की यह टिप्पणी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना प्रमुख राज ठाकरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच दिल्ली में हुई एक बैठक के मद्देनजर आयी है। उद्धव ठाकरे ने नांदेड़ जिले में एक सभा को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि यदि भाजपा उनके चचेरे भाई को अपने साथ ले लेती है, तो इससे उन्हें कोई परेशान नहीं होगी।

राज ठाकरे की दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात के बाद उद्धव ठाकरे ने भाजपा पर निशाना साधा है। दोनों नेताओं के बीच यह मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब ऐसी चर्चा है कि भाजपा महाराष्ट्र में अपने गठबंधन को बढ़ाने के लिए लोकसभा चुनाव में राज ठाकरे की एमएनएस के साथ गठबंधन करना चाहती है। उद्धव ने कहा, ''भाजपा अच्छी तरह से जानती है कि उसे महाराष्ट्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर वोट नहीं मिलने वाले हैं। लोग यहां (बाल) ठाकरे के नाम पर वोट करते हैं। इस अहसास ने भाजपा को बाहर (भाजपा) से नेताओं को चुराने की कोशिश करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने भाजपा पर बाल ठाकरे की विरासत को हड़पने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने मराठवाड़ा क्षेत्र में नांदेड़ और हिंगोली जिलों के अपने दो दिवसीय दौरे के समापन पर कहा, पहले, उन्होंने बाल ठाकरे की तस्वीर चुरायी, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आज, वे एक और ठाकरे को चुराने की कोशिश कर रहे हैं...इसे ले लो, मैं और मेरे लोग काफी हैं। उद्धव ठाकरे की पार्टी विपक्षी महा विकास आघाडी और 'इंडिया' गठबंधन का हिस्सा है। उन्होंने दावा किया कि ईसाइयों और मुसलमानों को भी उनकी हिंदुत्व की शैली से कोई दिक्कत नहीं है। उन्होंने कहा, जब हम भाजपा के साथ थे, तब शिवसेना (अविभाजित) की छवि खराब हो रही थी लेकिन जब से हमने उनसे संबंध तोड़ा है, ईसाई और मुस्लिम समुदाय के सदस्य भी कह रहे हैं कि उन्हें हमारी हिंदुत्व की विचारधारा से कोई दिक्कत नहीं है। दूसरी तरफ, शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने भी मंगलवार को आरोप लगाया कि राज ठाकरे के नेतृत्व वाली एमएनएस और भाजपा गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि वे महा विकास आघाडी की सफलता से डर गए हैं। दिल्ली में राज ठाकरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बीच बैठक के बारे में पूछे जाने पर राउत ने कहा कि अगर एमएनएस, भाजपा नीत महायुति में शामिल होती है, तो इसका राज्य की राजनीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा, ''यह घटनाक्रम एमवीए की सफलता के डर से हो रहे हैं।'' राउत ने कहा कि महाराष्ट्र के लोग बहुत बुद्धिमान हैं और वे राज्य के खिलाफ रुख रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करेंगे। एमवीए में शिवसेना (यूबीटी) के अलावा कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) अन्य घटक हैं। जब शिवसेना अविभाजित थी, तब राज ठाकरे ने उद्धव के साथ अपने मतभेदों के कारण, उससे नाता तोड़ लिया था और 2006 में महाराष्ट्र नव निर्माण सेना की स्थापना की थी। भले ही राज ठाकरे को एक शक्तिशाली वक्ता के रूप में देखा जाता है और उनके समर्थकों का एक आधार है, लेकिन उनकी पार्टी ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सकी। भाजपा सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने अतीत में उत्तर भारतीयों के खिलाफ राज ठाकरे की विवादास्पद टिप्पणी की तीखी आलोचना की थी।